eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 11, November 2025

नागार्जुन व्यक्तित्व दर्पण (निबंध – आईने के सामने)

डॉ0 बेबी गोल्डी कक्कड़[1]

[1]प्रवक्ता हिन्दी, राज स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेस, बनारस उ0प्र0

Received: 25 November 2025 Accepted & Reviewed: 28 November 2025, Published: 30 November 2025

Abstract

नागार्जुन हिंदी साहित्य के उन विरल रचनाकारों में हैं जिन्होंने अपने व्यक्तित्व, वैचारिक साहस और जनपक्षधर रचनाशक्ति से साहित्य को नया आयाम दिया। निबंध 'आईने के सामने' उनकी आत्मदर्शी शैली, आत्ममूल्यांकन और सामाजिक दृष्टि का दर्पण प्रस्तुत करता है। नागार्जुन यहाँ आईने के रूपक के माध्यम से व्यक्ति और लेखक दोनों का भीतर बाहर का चित्र उकेरते हैं। उनके व्यक्तित्व में विद्रोही तेवर, लोकतांत्रिक चेतना, लोकजीवन से गहरी आत्मीयता तथा संवेदनात्मक ईमानदारी प्रमुख रूप से प्रकट होती है। यह निबंध न केवल उनके अंतर्मन का सहज उद्घाटन है, बल्कि उनके साहित्यिक व्यक्तित्व के विकास, संघर्ष और सामाजिक प्रतिबद्धता को समझने का महत्वपूर्ण स्रोत भी सिद्ध होता है।

मुख्य शब्द– नागार्जुन, व्यक्तित्व–दर्पण, आत्मदर्शन, जनपक्षधरता, वैचारिक प्रतिबद्धता, सामाजिक चेतना, विद्रोही तेवर, आत्ममूल्यांकन

Introduction

हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ क्रांतिकारी व्यक्तित्व के धनी रचनाकार बाबा वैद्यनाथ मिश्र उर्फ नागार्जुन सिर्फ कवि, उपन्यासकार ही नहीं, श्रेष्ठ निबंधकार भी रहे हैं स महान रचनाकार नागार्जुन को शुरू में जब पढ़ना शुरू किया तभी ऐसा आभास हुआ की नागार्जुन से बेहतर रचनाकार होना मुश्किल है, सत्य कहने की ताकत उनमें अपार थी, हमारा मन उनकी रचना को पढ़ पूर्ण कम्पित हो जाता है उन्होंने सिर्फ उपन्यास, कविता ही नहीं लिखी उनका बाल साहित्य और निबंध सदैव नूतन है अदभुत व्यक्तित्व का नाम है नागार्जुन,

कितना कुछ कह डाला है, साहित्य में बिना किसी का नाम लिए नागार्जुन का निबंध आश्चर्य में डाल देता है नागार्जुन की रचना का विषय कोई बाहरी नहीं था उन्होंने स्वयं के जीवन की भोगी पीड़ा को उलट कर रख दिया है। देश की मिट्टी संस्कृति वहां के लोग, भाषा सब कुछ उनके निबंध में यदि दर्शनीय है। शोषण का तांडव कल भी था आज भी है हमेशा रहेगा, यह मानव सृष्टि के साथ ही नष्ट होगा, इतनी बड़ी दुनिया में भांति –भांति के लोग हैं किसी में देवता छिपा है, किसी में दैत्य, ऐसा व्यक्ति आपका अपना भी हो सकता है। नागार्जुन ने करीब 64 निबंध लिखे हैं उन्हीं मे से एक है आईने के सामने, नागार्जुन के पूर्वज तरौनी गांव के रहने वाले थे पर कुछ लोग समोल को इनका गाँव मानते हैं इनके पर दादा पारसमणि मिश्र पिता गोकुल मिश्र थे स इन्होंने स्वयं कहा है कि मेरा कुल सिर्फ नाम के लिए ब्राह्मण था। जीविका चलाने के लिए थोड़ा–थोड़ा संस्कृत का ज्ञान मात्र था। पेशेवर तौर पर खेती बारी थी, बाबा दादा को खाने पीने से कभी फुर्सत ही नहीं मिली कि देश दुनिया में क्या हो रहा है का पता हो यदि उनको अल्प ज्ञानी ब्राह्मण कहा जाए तो गलत नहीं होगा। थोड़ी सी पंडिताई और खेती–बाड़ी यही उनकी जीविका का माध्यम था इनके दादा, परदादा अच्छे और ईमानदार थे। जिस कारण दरभंगा के राजा ने इनको जमीन कुछ माफी के तौर पर दी थी, पर चाचा की अति शीघ्र मृत्यु, चरित्रहीन नशेड़ी पिता ने कुल का नाश कर

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 11, November 2025

दिया, किस तरह जीवन चलता रहा यह कहना मुश्किल है यह तो नागार्जुन से बेहतर कोई नहीं जान सकता, बड़ा ही संघर्षमयी जीवन था इनके विषय हम कहते हैं कि इनका ज्यादातर समय मित्रों के साथ बीतता था। यहां वह छोटी जाति के लोगों के साथ समय बिताने लगे, यही पर उन्होंने शोषण का नगण्य रूप भी देखा। जिसे देखकर उनके मन में संवेदना पैदा होने लगी। लापरवाह स्वार्थी पिता जो घर गृहस्थी चलाने मे कभी समर्थ नहीं थे वे भाभी के प्रति आकर्षित होने लगे या कहा जाए गोकुल मिश्र का यह स्वभाव था तो गलत नहीं होगा। जिस कारण अपनी पत्नी की अपेक्षा करते रहते थे। इसके उपन्यास रतिनाथ की चाची की मे इस बात की पुष्टि दिखाई देती है स्वयं के जीवन में भोगा गया दर्द इन्होंने इस उपन्यास में लिखा,

फिर आईने के सामने निबंध में इसकी पुष्टि कुछ इस प्रकार की सामने नागा जी का शिशु का चेहरा, पीछे अधेड़ पुरुष की मुखाकृति, अगले ही क्षण मुख पर तनाव, क्रोध से होंठ कांप रहा है। तेरा हाथ काट डालूंगा क्यों अंट संट लिख रहा है, कोई क्या बाप की बुराई करता है शैतान, पर मैंने कुछ झूठ तो नहीं लिखा पिताजी मेरी चाची के साथ आपका क्या रिश्ता था आपने मेरी मां का गला कुल्हाड़ी से क्यों रेता आपका लगाव समाज की दसियों औरतों से था, पर मां और मेरे भाई बहन की अपेक्षा, धीरे–धीरे सबने दम तोड़ दिया स चुप जीप खींच लूंगा, हड्डी पसली तोड़ दूंगा) माँ मर गयी नाना ने साल भर संभाला पर वहां भी ज्यादा दिन टिक नहीं सके क्योंकि इनके नाना का अपने दामाद से कभी नहीं बना, इतना झगड़ा हुआ कि रिश्ते ही खत्म हो गए स. नागार्जुन का यह सबसे बड़ा दुख था।

कहा जाता है कि व्यक्ति के पाप कितने भी बड़े हो पर जितना भी वह पाप करता है अंत में उसे सब भोगना पड़ता है, वही हुआ पिता के अंतिम समय में नागार्जुन वहा नहीं थे। संदेश पश्चिम दिशा की यात्रा पर निकले थे, इन बातों से स्पष्ट होता है कि नागार्जुन को अपने पिता से जरा सी भी प्रेम नहीं था पारिवारिक परिवर्तन की अर्थव्यवस्था अंत में क्रोध आक्रोश पैदा करती है यही नागार्जुन की ताकत बनी।

रचना का मूल केंद्र बिंदु बनने में नागार्जुन हर आम आदमी के व्यक्तित्व के तार है जो उनकी रचना को पढ़कर स्वयं झंकृत हो उठता है उनके आगे कुछ भी कहा नहीं जा सकता।

नागार्जुन जिसके नाम का अर्थ है भगवान शिव, नागों का रक्षक, बौद्ध शिक्षक को भी नागार्जुन कहा जाता है वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र इनकी पहचान कभी भी इस नाम से नहीं हुइ। नागार्जुन नाम मे ही प्रगतिवादी सोच की झलक मिलती है, प्रगतिवादी रचनाकार को निरंतर इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि वह सत्य की राह पर चले सयह बात पर नागार्जुन पूरी तरह खरे उतरते है। समाज में सबसे अधिक पीड़ित नारी और किसान ही रहे हैं। वर्तमान में स्त्रियां बहुत बदल रही है और इस कार्य में नागार्जुन जैसे साहित्यकार की आवश्यकता पग पग पर रहेगी। नागार्जुन ने अपनी मां को बहुत करीब से देखा उनकी पीड़ा को समझा था बाद में जब वह छोटी जाति के लोगों के साथ रहते थे तो वहां की भी स्त्रियों की दशा भी चाची की भी पीड़ा को उन्होंने देखा था पुरुषों के बिछाए जाल में नारी किस प्रकार क्षणिक आवेग के अपना पूरा जीवन नष्ट कर लेती हैं। उसके बाद उनका जीवन मृत्यु दंड के समान हो जाता है। जबकि पुरुष के जीवन पर इसका कोई भी असर नहीं होता है। अतः नारी का सजग होना सिर्फ अपने अधिकारों के प्रति ही नहीं अपने देह के प्रति भी जरूरी है जब तक वह स्वयं को देह मानती रहेगी तब तक पुरुष की हवस का शिकार होती रहेगी उसे स्वयं को सौंदर्य की देवी नहीं बल्कि उसे अपने वर्चस्व की लड़ाई स्वयं लड़नी होगी।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 11, November 2025

निबंध 'आईने के सामने' नागार्जुन के व्यक्तित्व का एक पारदर्शी दर्पण है, जिसमें उनका कवि–मन, संघर्षशील जीवन, सामाजिक प्रतिबद्धता और मानवीय संवेदना पूरी सहजता से प्रकट होती है। आईना यहाँ मात्र प्रतिबिंब का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मपरीक्षण और आत्ममूल्यांकन का दार्शनिक उपकरण बन जाता है। नागार्जुन अपने व्यक्तित्व को किसी आडंबर, कृत्रिमता या बनावट के बिना पाठक के समक्ष रखते हैं। उनके स्वभाव की बेबाकी, जनसरोकारों के प्रति उनकी प्रबल निष्ठा, जीवन में आए उतार–चढ़ावों से जूझते हुए बने रहने का जिजीविषा–बोधकृये सभी तत्व उनके व्यक्तित्व को अद्वितीय बनाते हैं।

इस प्रकार, यह निबंध न केवल नागार्जुन के आत्मदर्शन का दस्तावेज़ है, बल्कि उनके साहित्यिक चरित्र, सामाजिक दृष्टि और रचनात्मक चेतना को समझने का महत्वपूर्ण स्रोत भी है। यह पाठक को यह संदेश देता है कि सच्चा रचनाकार वही है जो अपने समय, समाज और स्वयं के प्रति ईमानदार बना रहता है।

संदर्भ ग्रंथ–

1. नागार्जुन : रचनावलियाँ, राजकमल प्रकाशन
2. नागार्जुनः जीवनी और कृतित्व, शंकर मोहन
3. नागार्जुन के निबंधः सम्पादक, नामवर सिंह
4. हिंदी के श्रेष्ठ निबंधः संपादक, रामस्वरूप चतुर्वेदी
5. नागार्जुन का साहित्य : एक समालोचनात्मक अध्ययन, अशोक वाजपेयी
6. जनकवि नागार्जुन : आलोचक, अरविंद त्रिपाठी
7. नागार्जुन की काव्य चेतना, मृणाल पांडे
8. भारतीय निबंधकार : व्यक्तित्व और कृतित्व, डॉ. रामबली मिश्र
9. नागार्जुन : जीवन, साहित्य और संघर्ष, विजय कुमार
10. हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल / डॉ. नामवर सिंह की टिप्पणियाँ (नागार्जुन संदर्भित अध्याय)